5 जुलाई 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

अग्निपथ योजना को समझे..

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN36496

मासिक जागरण पत्रिका

जड़ों की ओर...

झाबुआ के गुलरीपाड़ा, रतलाम के आम्बा गांव और मंदसौर में लगभग २६० से अधिक लोगों ने फिर से हिंदू धर्म में वापसी की, ईसाई व मुस्लिम हो चुके लोगों के स्वेच्छा से हिंदू धर्म में वापसी का विश्लेषण... पढिए जाग्रत मालवा के इस अंक में

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है. शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

HIGH PERFORMANCE CHIP | MULTIPLE PROTECTION | AUTOMATIC RECOGNITION | LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL | PWN CHARGE | SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

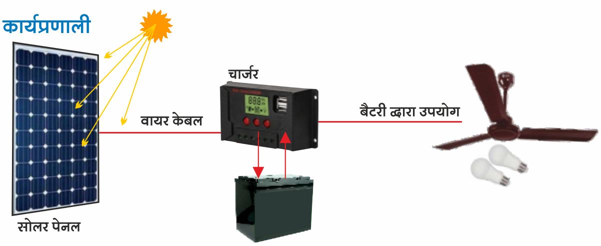

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 जुलाई 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 01 अंक : 12
•••
आषाढ़-शुक्ल
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagrutmalwa@gmail.com
jagrutmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

इस परिवर्तनशील दुनिया में सबकुछ बदल जाता है लेकिन केवल धर्म और प्रसिद्धि दो ऐसी चीजें है जो कभी नहीं बदलतीं, हमेशा स्थिर रहती हैं। अगर किसी दबाव, भ्रम या प्रलोभन में आकर किसी ने धर्म परिवर्तन कर भी लिया है तो वह स्थाई नहीं होता है। जब भी हृदय परिवर्तन होता है वह व्यक्ति अपने मूल धर्म को श्रद्धा के साथ पुनः ग्रहण कर लेता है और वह आनंद की अनुभूति करता है। वैसे भी धर्म तो एक ही है और वह है सत्य सनातन और हम सभी भारतवासियों के लिए यह गौरव की बात है कि सत्य सनातन धर्म का जनक भारत है।

सनातन धर्म ही एक ऐसा महासागर है जो अनेक धर्मों को, संस्कृतियों को अपने अन्दर समाहित करता आया है और करता रहेगा। वर्तमान में भी कई उदाहरण जग जाहिर हैं। जो बिछड़ गये या चले गये उन सबके लिए सनातन धर्म के दरवाजे सदैव खुले हैं।

भारत की आत्मा धर्म है और धर्म को धारण करता है शरीर। शरीर नश्वर है लेकिन आत्मा अजर है, अमर है। व्यक्ति के मरने के बाद सब कुछ छूट जाता है, नहीं छूटता है तो वह है धर्म। जब मरने के बाद भी धर्म नहीं छूटता तो उसके जीते जी कैसे छूट सकता है। कुछ समय के लिए वह दिग्भ्रमित हो सकता है लेकिन अन्त में घर वापसी होती ही है, यह भी सनातन सत्य है।

भारत एक प्राचीन राष्ट्र है और सृष्टि का प्रथम राष्ट्र है। आधुनिक शोध से यह भी सिद्ध हुआ है कि भारत के सभी लोगों का गुणसूत्र (डीएनए) लगभग 40 हजार वर्षों से एक है। जैसे माता-पिता और सन्तान मिलकर परिवार बनता है वैसे ही समान मातृभूमि, समान पूर्वज, पुत्ररूप समाज, समान संस्कृति मिलकर राष्ट्र बनता है। धर्म जाति और राष्ट्रीयता की दृष्टि से हम सब भारतीय हैं। भारतीयता ही हिन्दुत्व है और हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है। इस राष्ट्र को बनाने वाले और इसको पहचान देने वाले हिन्दू ही हैं। यहाँ का धम, संस्कृति और समाज हिन्दू नाम से ही जाना जाता है। यहाँ के दर्शन जीवन पद्धति में हिन्दुत्व ही झलकता है। इस राष्ट्र की यह पहचान अजर है, अमर है, चिर पुरातन है। अतः हम गर्व से कह सकते हैं कि भारत एक सनातन हिन्दू राष्ट्र था, हिन्दू राष्ट्र है और हिन्दू राष्ट्र रहेगा।

हम सभी भारतवासियों के लिए यह भूखण्ड मात्र नहीं बल्कि आराध्य देव है। इस मातृभूमि का कण-कण हमारे लिए सदैव पूज्य है। विविधता में एकता यही इस राष्ट्र की विशेषता है। विविधता होने पर भी यह एकात्म हिन्दू राष्ट्र है।

जड़ों की ओर....

झाबुआ, रतलाम व मंदसौर में पिछले महीने 260 से अधिक लोगों ने पुनः हिन्दू धर्म को स्वीकार किया, जो पूर्व में ईसाई या मुस्लिम हो गए थे।

अमन व्यास

'मेरो मन अनंत कहाँ सुख पावै जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पै आवै' सूरदास जी का लिखा ये पद मुझे बार-बार याद आ रहा है। इसी के साथ मुझे अपने वरिष्ठों की पंक्ति कि 'लौटना तो सबको जड़ों की तरफ ही पड़ेगा' याद आ रही है और इसका कारण है दुनिया भर के धनिक, वैभव सम्पन्न परिवारों में जन्मे लोगों का अपना सारा सुखमय जीवन छोड़कर भारत में आकर सनातन धर्म अपनाना और सेवा, परोपकार इत्यादि करना।

पूरी दुनिया में जब ऐसा हो रहा है तो अपना मालवा-निमाड़ पीछे कैसे रह सकता था, सो मालवा में भी बीते तीन सप्ताह में तीन बड़ी घटनाएं घटीं, इन घटनाओं ने पूरे देश का ध्यानाकर्षण किया। पहली घटना - झाबुआ के गुलरीपाड़ा गाँव की सौ परिवारों की एक बस्ती में 5-10 परिवारों को छोड़कर सभी कन्वर्ट होकर ईसाई हो गए थे, पिछले दिनों इसी गाँव में प्रसिद्ध कथावाचक कमल किशोर नागर जी द्वारा स्वयं के व्यय से श्रीराम दरबार प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम किया जा रहा था। इस कार्यक्रम में यह कन्वर्ट लोग भी सम्मिलित हुए। इसी कार्यक्रम के दौरान इन्हें अपने मूल धर्म का भी आभास हुआ। कन्वर्ट होकर हिन्दू से ईसाई हुए इन सभी परिवारों ने ग्रामीणों व नागर जी के सामने फिर से अपने मूल धर्म में लौटने अर्थात् घर वापसी का आग्रह किया और सहर्ष 250 से अधिक लोगों ने पुनः हिन्दूधर्म स्वीकार किया।

आंबा में हिन्दू धर्म में वापसी करते हुए लोग

दूसरी घटना- जिस तरह झाबुआ के गुलरिपाड़ा में श्रीराम दरबार प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम चल रहा था वैसे ही रतलाम के आम्बा गाँव में महंत आनंदगिरी जी द्वारा भीमनाथ महादेव मंदिर में शिवपुराण का कार्यक्रम चल रहा था। पिछले कुछ समय से यहाँ पर 7 मुस्लिम परिवार आकर रहने लगे थे। इन सात परिवारों के तीस से भी अधिक लोगों ने इस कार्यक्रम को देखा, इनके मन में पूर्व में स्वयं के हिन्दू होने का भाव जगा और इन्होने भी महंत जी और ग्रामीणों से सनातन में वापसी का आग्रह किया। न्यायालय द्वारा शपथ पत्र बने और सभी ने सहर्ष हिन्दू धर्म को अंगीकार किया।

इन्हीं घर वापसी करने वालों में एक मोहम्मद शाह हैं जिनका नया नाम रामसिंह हो गया है, उन्होंने बताया कि हम हिन्दू ही थे हमारी तीन पीढ़ियां इस्लाम को मानती आ रही हैं। उनका पुश्तैनी काम जड़ी-बूटियां बेचना है। गांव में रहने के दौरान हिंदू धर्म में ध्यान बढ़ा और अपने मूल धर्म में वापसी की, बाकियों को भी नए नाम मिल गए हैं।

तीसरी घटना- मंदसौर में जिला सम्पादक संघ के अध्यक्ष जफर कुरैशी के मन में भी पूर्व में स्वयं के हिन्दू होने का भाव आया और उन्होंने मंदसौर में शिवना नदी के तट पर संतों व मंदसौर के प्रमुख नागरिकों की उपस्थिति में हिन्दू धर्म स्वीकार किया नया नाम चैतन्य मिला। जफर कुरैशी अकेले जरूर हैं लेकिन वो मंदसौर के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं उनका घर वापसी करना बहुत ही बड़ी बात है। उपरोक्त तीन घटनाओं के अलावा भी भारत समेत पूरी दुनिया में बड़ी संख्या में लोग सनातन को अंगीकार कर रहे हैं। पूरी दुनिया में एक्स-मुस्लिम शब्द यानी भूतपूर्व मुस्लिम शब्द बड़ी तेजी से सुनाई दे रहा है, इसका कारण है बड़ी संख्या में मुस्लिम हो चुके लोग सनातन में वापसी कर रहे हैं, लेकिन जो मालवा की आपने तीनों घटनायें पढ़ीं अथवा देशभर में और कहीं घर वापसी हो रही इसके लिए कोई किसी प्रकार का लालच या डर नहीं दिखा रहा, न ही कहीं कोई हिन्दू यह कहते हुए सुनाई दे रहा कि हमारा धर्म अच्छा है बाकी हीन हैं, इसलिए हमारे धर्म में आ जाओ। आज यह जो बड़ी सख्या में लोग सनातन को अंगीकार कर रहे हैं यह अपनी इच्छा से कर रहे हैं, ओंबा गाँव में तो ग्रामीणों ने घर वापसी करने वालों का शपथ पत्र बनवाया कि किसी डर, दबाव अथवा लालच के कारण नहीं बल्कि हम अपनी इच्छा से हिन्दू धर्म अपना रहे हैं। हिन्दुओं ने कभी किसी पर राज्य करने की इच्छा नहीं रखी, तलवार के दम पर कन्वर्ट नहीं किया क्योंकि वो जानते थे कि कभी न कभी सबको इसी हिन्दू धर्म की और लौटना पड़ेगा, क्योंकि यही 'मानव धर्म' है, इसीलिए हमारे बड़े कहते है ''उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पै आवै 'और' लौटना तो सबको जड़ों की तरफ ही पड़ेगा।''

अग्निपथ योजना को समझिये

क्या है अग्निवीर योजना -अग्निपथ योजना के माध्यम से सेना में अब भर्ती 4 वर्ष के लिए होगी,और वह आयु है साढ़े सत्रह वर्ष से 21 वर्ष, प्रारंभ के जो छः महीने हैं वह ट्रेनिंग के है। आप यह भी समझिये कि अग्निपथ के माध्यम से जवानों की ही भर्ती होगी। जो ऑफिसर रेंक के अधिकारी हैं उनकी भर्ती पूर्ववत ही रहेगी यानी उसमें कोई बदलाव नहीं किया गया है।

इस योजना के माध्यम से जो भर्ती होंगे उनमें से 25 प्रतिशत अग्निवीरों को सेना 4 वर्ष बाद नियमित कर लेगी, शेष जो 75 प्रतिशत बचेंगे उन्हें अपनी इच्छा से जो करना हो वो कर सकेंगे। लेकिन हां सरकार ने यह कहा है कि जो 75 प्रतिशत वापस होंगे उन्हें अर्ध सैनिक बल, सीआरपीएफ,असम रायफल्स और पुलिस सेवाओं में प्राथमिकता दी जायेगी। जब चार वर्ष बाद अग्निवीर सेवा से मुक्त होगा तब उसकी सैलेरी और सरकार द्वारा कॉर्पस फण्ड में किये योगदान की राशि मिलाकर 11 लाख 71 हजार के लगभग सेवा निधि मिलेगी, जिससे वह नए क्षेत्र में कुछ करना चाहे, कोई स्टार्टअप शुरू करना चाहे तो कर सकता है।

योजना लाने का कारण, विरोध व प्रत्युत्तर - सबसे प्रथम बात यह जान लीजिए कि केवल सरकार इस योजना को लायी है ऐसा कतई नहीं है। इस योजना के लिए भी एक टीम बनी ही होगी, उस टीम में वर्तमान में सेना में पदस्थ बड़े अधिकारी और री-टायर्ड अधिकारी रहे होंगे, इसलिए कई सैन्य अधिकारियों और रक्षा विशेषज्ञों द्वारा इसे अनिवार्य और ऐतिहासिक निर्णय बताकर स्वागत किया है।

दूसरी बात - इस योजना को लाने के पीछे के जो कुछ सबसे बड़े कारण हैं उनमें से एक है भारतीय सेना को युवा बनाना। **अभी भारतीय सेना की औसत उम्र 32 वर्ष है जो अग्निवीर के कारण घटकर 24 से 26 वर्ष हो जायेगी** और रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि ये इस समय की सबसे बड़ी जरूरत है। क्योंकि आज भारत दुनिया का सबसे युवा देश है जब यह आबादी तेजी से बूढ़ी होगी तब भी सेना का युवा रहना बहुत जरुरी होगा, इसलिए विशेषज्ञों के अनुसार इस योजना को 2-5 वर्षों के लिए नहीं बल्कि लंबे समय के लक्ष्य के आधार पर देखना चाहिए। एक और बड़ा कारण जो बताया जा रहा है। कि नयी पीढ़ी अधिक टेक्नो-फ्रेंडली होती है। नयी तकनीक आ रही है तो नयी पीढ़ी नयी तकनीक का ठीक से उपयोग करेगी तो भारतीय सेना और भी आधुनिक होगी।

तीसरा बड़ा कारण - यह अधिकृत कारण नहीं होते हुए भी दृष्टिगत तो हो ही रहा है। इजरायल की स्तुति करते हम सब नहीं थकते कि वहाँ के प्रत्येक नागरिक को सेना में कुछ वर्ष बिताने ही पड़ते हैं इसलिए एक छोटा सा देश है इजरायल पर दुनिया में कोई उसे आँख नहीं दिखा सकता क्योंकि वहां प्रत्येक व्यक्ति में सैन्य प्रशिक्षण के कारण नागरिक अनुशासन व देशभक्ति है, और हो सकता है यह योजना उसी तरह कुछ दूरगामी सोच के आधार पर लाई गई हो।

विद्यार्थियों की आपत्ति व सरकार का जवाब- पहला और सबसे बड़ा कारण - कोरोना के कारण पिछले दो वर्षों से सेना में भर्ती नहीं निकली, जिसके कारण कुछ लोग जो फिजिकल और मेडिकल टेस्ट पास हो गए थे और लिखित परीक्षा ही बची थी, उनकी उम्र इस योजना के कारण अचानक अधिक हो गई और वे रेस से बाहर हो गए। सरकार तक भी यह बात पहुंची और आयुसीमा की बात आई तो इस वर्ष आयु सीमा 23 वर्ष कर दी गई है।

दूसरी बात इसके विरोध में कही जा रही कि 21 वर्ष की आयु में रिटायर्ड होने के बाद अग्निवीरों को पेंशन नहीं मिलेगी तो क्या होगा, तो इसका सीधा सा उत्तर है कि 4 वर्ष की नौकरी करकर कोई पेंशन नहीं मिलती, विशेषकर जिस उम्र में वो रिटायर हो रहा है वो रिटायर होने की उम्र भी नहीं है।

तीसरा बड़ा कारण विरोध का यह है कि जब ये बच्चे रिटायर होंगे, वह आयु तो काम शुरू करने की है। सेना से आने के बाद बन्दूक चलाने के अलावा इनके पास दूसरी कोई स्किल नहीं रहेगी तो यह क्या करेंगे। इस प्रश्न का उत्तर भ्रम के जाल से दूर होकर आराम से समझना चाहिए। सेना इन अग्निवीरों में से 25 प्रतिशत को तो चार वर्ष बाद नियमित कर ही रही है, बाकी बचे 75 प्रतिशत को रक्षा मंत्रालय,अर्धसैनिक बल, सीआरपीएफ ,असम रायफल्स और पुलिस सेवाओं में प्राथमिकता दी जायेगी। इसी के साथ 10 वीं के बाद जो अग्निवीर बनेंगे उन्हें 12 वीं पास का पत्र दिया जाएगा और 12 वीं पास होकर आने वालों को भी विशेष प्रमाणपत्र दिए जाएंगे, इन प्रमाणपत्रों के कारण इन अग्निवीरों को अनिवार्य रूप से लोन इत्यादि सुविधाओं में अधिक लाभ और प्राथमिकता मिलेगी। इसके साथ ही जो आन्दोलन के नाम पर ट्रेनों को फूंक रहे और उपद्रव कर रहे हैं यदि वो सच में सेना में जाना चाहते हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि सेना में जाना हो तो यह तो कतई नहीं करना चाहिए।

सबके पूर्वज समान हैं

तृतीय वर्ष के समापन कार्यक्रम में सरसंघचालक मोहन भागवतजी के भाषण के गूढ़ अर्थ

कार्यक्रम को संबोधित करते सरसंघचालक मोहन भागवत

02 जून को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नागपुर में संपन्न हुए तृतीय वर्ष के प्रशिक्षण के अवसर पर परंपरा अनुसार सरसंघचालक पूज्य डॉ. मोहन जी भागवत का उद्बोधन हुआ। संघ प्रमुख ने अपने वक्तव्य में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय विषयों पर संघ के दृष्टिकोण से अपने स्वयंसेवकों को अवगत करवाया। यहां ध्यान देने की बात है कि यह उद्बोधन संघ के तृतीय वर्ष शिक्षित, अनुशासित और ध्येय निष्ठ स्वयंसेवकों को संबोधित था। डिजिटल, प्रिंट और सोश्यल मीडिया के माध्यम से वक्तव्य के एक हिस्से को बिना संदर्भ के कुछ विश्लेषकों ने इस प्रकार प्रचारित किया गया मानो संघ अपने ध्येय से भटक गया है, संघ भी तुष्टीकरण में लग गया है। वास्तव में संघ प्रमुख ने अपने वक्तव्य में अनेक विषयों को छुआ जो हमारे देश-समाज के लिए विशेष महत्व रखते हैं और प्रासंगिक हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत के सामर्थ्य और वैश्विक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए वह कहते हैं कि, ''भारत अगर पर्याप्त शक्तिशाली होता तो इस युद्ध को रोकता। लेकिन वह नहीं रोक सकता, उसकी शक्ति अभी बढ़ रही है, पूरी नहीं हुई है।'' लेकिन इसी के साथ उन्होंने चीन की मंशा पर भी प्रश्न उठाते हुए कहा, ''चीन इसे क्यों नहीं रोकता? क्योंकि इस युद्ध में उसको भी कुछ नजर आ रहा है। पता नहीं कोई नई कल्पना उसको सूझेगी, उपद्रव होंगे।'' युद्ध के प्रभावों से जूझते विकासशील और पिछड़े देशों की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, ''इस युद्ध ने हमारे जैसे देश के लिए सुरक्षा और आर्थिक चुनौतियां बढ़ा दी हैं। हमको अपने प्रयासों को अधिक दृढ़ करना पड़ेगा, शक्ति सम्पन्न होना पड़ेगा। ऐसी शक्ति अगर भारत के हाथ में होती तो दुनिया में यह प्रसंग नहीं आता।'' अमेरिका, रशिया और चाइना की धर्म और नीति विहीन शक्ति पर आपने कहा कि, ये शक्तिमान लोग हैं, लेकिन अपनत्व और एकत्व से आने वाली धर्म प्राण नीति उनके पास नहीं है। इसलिए भाषा तो वही शांति और एकता की है। यूएन जैसी बड़ी-बड़ी संस्थाएं भी बना रखी हैं, सैन्य संभार वगैरह सब कुछ है, समृद्धि है, लेकिन स्वार्थ में ही जीते हैं। अपने स्वार्थ की सुरक्षा के लिए सब तत्वों का भी उपयोग करते हैं। अतः आज विश्व को देशों की सैन्य शक्ति, परमाणु शस्त्र और रणकौशल की नहीं अपितु सभी के अस्तित्व को स्वीकार करने वाली धर्म आधारित नीति की आवश्यकता है, बताने का प्रयास किया।

संघ प्रमुख ने इसी के बाद हिंदू-मुस्लिम विषय पर संघ के दृष्टिकोण को रखते हुए कहा, 'भारत में रहने वाले सभी एक ही भारत माता के पुत्र हैं। सब समान पूर्वजों के वंशज हैं। यही स्व-आधारित धर्म-संस्कृति सबको विरासत में मिला है। हम सबको ये ध्यान में रखना होगा कि अपनी विविधताएं अलगाव नहीं हैं।' इसी समय उनके द्वारा कहे गए एक हिस्से का दुष्प्रचार किया गया और मनमाना विश्लेषण किया गया जबकि पूरे संदर्भ जिसमें वह अंश बोला गया वह भारत के सर्वस्पर्शी एवं समावेशी स्वरूप को ही स्पष्ट करता है। उन्होंने कहा कि, 'अभी ज्ञानवापी का मुद्दा चल रहा है। अब ऐसे मुद्दे हैं, एक इतिहास तो है, उसको हम बदल नहीं सकते। वो इतिहास हमने नहीं बनाया। न आज के अपने आपको हिन्दू कहलाने वालों ने बनाया, न आज के मुसलमानों ने बनाया। उस समय घटा। इस्लाम बाहर से आया, आक्रामकों के हाथ आया। उस आक्रमण में भारत की स्वतंत्रता चाहने वाले व्यक्तियों का मनोधैर्य खत्म करने के लिए देव स्थान तोड़े गए। ऐसे हजारों स्थान हैं। हिन्दू समाज का विशेष ध्यान जिन पर है, विशेष श्रद्धा जिनके बारे में है, सामर्थ्य, संपन्न, संगठित हिन्दू समाज अपने हिन्दुत्व की सच्ची प्रवृत्ति के आधार पर देश में ही क्या सारी दुनिया के कलह, द्वेष, स्पर्धाएं बंद करके एक नई सुखी, सुंदर दुनिया बनाने की क्षमता रखता है। उस क्षमता का, उस गुणवत्ता का जागरण सारे देश में करने का संघ प्रयास 1925 से चल रहा है। कार्यक्रम खंडित हो गए बार-बार, लेकिन कार्य कभी खंडित नहीं हुआ। एक-एक कदम आगे बढ़ रहा है। आज नहीं तो कल इसे हम यशस्वी कर पाएंगे। अब जो दृश्य दिखता है उसमें लगता है कि आने वाले कुछ ही दिनों में संपूर्ण भारतवर्ष का समाज एक होकर, सारे भेद भूलकर, आपस के स्वार्थों को तिलांजलि देकर देश को

बड़ा बनाकर दुनिया को सुखी बनाने के उद्योग में लगा है। यह दृश्य अपने कार्य की गति बढ़ाकर खड़ा हो सकता है।' सार रूप में देखे तो संघ प्रमुख का यह वक्तव्य देश के सभी वर्गो को छूने वाला, सभी मुद्दों पर संघ की दृष्टि स्पष्ट करने वाला और भारत के भविष्य का दस्तावेज रहा।

पूज्य सरसंघचालक ने स्वयंसेवकों को हिंदू राष्ट्र के लक्ष्य की प्राप्ति तक धैर्यवान और ध्येय निष्ठ होने का संदेश देते हुए कहा कि, अभी लंबा चलना पड़ेगा। आज किसी ने बोला और कल बदल हो गया, ऐसा नहीं होगा। कठिन रास्ता है, ऊबड़-खाबड़ है। लेकिन इसमें से जाना पड़ेगा।

ऐसे कुछ स्थान हैं। उसके बारे में मामले उठते हैं। हिन्दू मुसलमानों के विरूद्ध नहीं सोचता। आज के मुसलमानों के पूर्वज भी उस समय हिन्दू थे। उन सबको चिरकाल तक स्वतंत्रता से वंचित रखने के लिए और उनका मनो-धैर्य दबाने के लिए यह किया गया। इसलिए हिन्दू को लगता है कि इसका पुनः उद्धार होना चाहिए। यहां पर संघ प्रमुख का भी पूर्व वक्तव्य प्रासंगिक प्रतीत होता है जिसमें उन्होंने कहा था कि, 'संघ कुछ करेगा नहीं और स्वयंसेवक कुछ छोड़ेगा नहीं।' संघ के कुछ न करने से आशय संघ अपने शाखा आधारित व्यक्ति निर्माण के कार्य के अलावा कुछ नहीं करेगा और कुछ छोड़ेगा नहीं से आशय स्वयंसेवक समाज में विलीन हो कर समाज हित में प्रत्येक कार्य को निपुणता से करेंगे।

संघ प्रमुख ने इसके बाद कहा ''हम तो कुछ नहीं कहते। हमने 09 नवम्बर को कह दिया कि एक श्रीरामजन्मभूमि का आंदोलन था, जिसमें हम अपनी प्रकृति के विरूद्ध किसी ऐतिहासिक कारण से उस समय की परिस्थिति के अनुकूल सम्मिलित हुए। हमने उस काम को पूरा किया, अब हमको कोई आंदोलन नहीं करना है। लेकिन, कुछ विषय अगर मन में हैं तो उठते हैं। ये किसी के विरूद्ध नहीं हैं, और विरूद्ध मानना भी नहीं चाहिए। ऐसा कुछ है तो आपस में मिल-बैठ कर सहमति से कोई रास्ता निकालिये। लेकिन हर बार रास्ता नहीं निकल सकता। इसमें कोर्ट में जाते हैं। कोर्ट जो निर्णय देगा उसको मानना चाहिए। अपनी संविधान सम्मत न्याय-व्यवस्था को पवित्र, सर्वश्रेष्ठ मानकर उसके निर्णय हमको पालन करने चाहिए। उनके निर्णयों पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाना चाहिए।'' यहां पर उनका मंतव्य यही रहा होगा कि कोई भी देश आंतरिक विवादों में घिरा रहकर और संघर्ष से जूझते हुए विश्वशक्ति नहीं बन सकता अतः सर्वसम्मति बनाकर अथवा अपनी संवैधानिक व्यवस्थाओं पर विश्वास कर ही देश को आगे ले जाया जा सकेगा।

यहां तक तो सब ठीक था किंतु इसके बाद जो बात बोली गई उसी पर विवाद खड़ा करने की चेष्टा की गई। उन्होंने हिंदुओं के साथ

शारिरीक कार्यक्रम का प्रदर्शन करते शिक्षार्थी स्वयंसेवक

मुस्लिमों को भी राष्ट्रभक्त होने की नसीहत देते हुए कहा 'ठीक है कुछ स्थानों के बारे में हमारी प्रतीकात्मक कुछ विशेष श्रद्धा थी, उन स्थानों के बारे में हमने कहा, लेकिन रोज एक नया मामला निकालना, ये भी नहीं करना चाहिए। हमको झगड़ा क्यों बढ़ाना है?... ज्ञानवापी के बारे में हमारी कुछ श्रद्धाएं हैं, जो परम्परा से चलती आयी हैं। इस्लाम भी एक पूजा पद्धति है। ठीक है, बाहर से आई है, लेकिन, जिन्होंने अपनायी है वे मुसलमान बाहर से संबन्ध नहीं रखते, ये उनको भी समझना चाहिए। यद्यपि पूजा उनकी उधर की है, उसमें वो रहना चाहते हैं वो अच्छी बात है, हमारे यहां किसी पूजा का विरोध नहीं। सबकी मान्यता और सबके प्रतीक के प्रति पवित्रता की भावना है। परन्तु पूजा वहां की होने के बाद भी वे सनातन काल से चलते आ रहे हमारे ऋषि-मुनि, राजा क्षत्रियों के वंशज हैं। समान पूर्वजों के वंशज हैं। परम्परा हमको समान मिली है। शत्रु-मित्र भाव हमारे लिए समान है। इसलिए उनको भी समझना चाहिए कि भारत मातृभूमि है।'

संघ प्रमुख का हिंदुओं को हर मस्जिद के नीचे मंदिर न खोजने की नसीहत संभवतः इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आज भी हिंदू समाज में अपने देव विग्रहों को लेकर उतना समर्पण और जिजीविषा नहीं जो होना चाहिए थी। बाबा विश्वनाथ ज्योर्तिलिंग प्रकट होने के बाद जब देश-दुनिया में लोग फव्वारा और अन्य अश्लील टिप्पणियां कर रहे थे तब हिंदू समाज की ओर से प्रतिरोध लगभग शून्य था, प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं किंतु हमारा समाज इस अविमुक्त क्षेत्र पर अपने ही भोलेनाथ को पाने के लिए न्यायालय के समक्ष गिड़गिड़ा रहा है। इस दशा में यदि स्थान-स्थान पर मस्जिदों के नीचे से मंदिर खोजे जाएं तो फिर न्यायालय की वर्षो की शिथिल प्रक्रिया के चलते हमारे देव अपमानित होते रहेंगे और हमारे समाज के मनोबल का पतन होता जायेगा। संभवतः यही कारण रहे होंगे कि आज इस प्रकार की आवश्यकता नहीं, कल जब समाज सशक्त होगा तो स्वयं मुस्लिम पक्ष ही उन स्थानों को हिंदुओं को सम्मान पूर्वक सौंप देगा अथवा समाज उन्हें पुनः प्राप्त कर पाने हेतु समक्ष होगा।

अमर क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद

दिलीप सिंह जाधव

जो राष्ट्र अपनी संस्कृति, अपने महापुरूषों की जीवनी, अपनी परंपराओं तथा राष्ट्रहित में किये गये बलिदानों को याद रखता है, अपने हृदय में राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव रखता है वह राष्ट्र कभी हारता नही सदैव विजेता रहता है। सर्दव प्रगतिशील और अमर रहता है। विदेशी आक्रांताओं के भारत में सत्तासीन होने के लम्बे दौर में भारतीयों ने अपनी विरासत, धर्म, संस्कारों को सुरक्षित रखा। आततायी सनातनकाल से धर्मांध क्रूर मुगलकाल तथा तदुपरांत ब्रिटिश साम्राज्यकाल में भी भारतीयों ने पूर्ण समर्पण कदापि नहीं किया। स्वातंत्र ज्योति सदैव चैतन्य रही। इस महान संघर्ष के एक महान सेनापति हमारे मध्यप्रदेश के भाभरा (अब चंद्रशेखर आजाद नगर) के चंद्रशेखर आजाद है। 23 जुलाई 1906 को जन्म हुआ और 27 फरवरी 1931 को आत्मबलिदान।

अपनी उम्र के 25 वर्ष भी चंद्रशेखर आजाद पूर्ण नहीं कर पाये परंतु उस छोटे से जीवनकाल में अपने राष्ट्र पर प्राण देने के अद्वितीय पराक्रम को पृथ्वी पर साकार कर गये हैं। अत्यंत गरीब पिता पंडित सीताराम तिवारी तथा माता जगरानी देवी की कोख से यह पराक्रमी भारतपुत्र जन्मा। कुल 5 भाई-बहन थे परंतु जीवित रहे केवल चंद्रशेखर । बाल्यकाल में 14 वर्ष की उम्र तक शिक्षा कुछ घर पर तथा कुछ संस्कृत विद्यापीठ वाराणसी में ग्रहण की। 14 वर्ष की उम्र में स्वातंत्र संग्राम में कूद गये। ब्रिटिश न्यायालय ने 25 बेतों की सजा दी। प्रत्येक बेंत की चोट से चमड़ी सहित मांस भी अंग्रेजों का हंटर नोंच लेता था परंतु सहनशीलता और कठोरता के इस चंद्रशेखर रूपी महामानव ने उफ तक नहीं की। आत्मनियंत्रण की परीक्षा अपने 14 वें वर्ष में ही चंद्रशेखर उत्तीर्ण कर चुके थे।

सन् 1920 से अपने अद्वितीय आत्मबलिदान दिवस 27 फरवरी 1931 तक का काल चंद्रशेखर का अत्यंत गतिवान रहा। पाठकगण थोड़ा सोचिये - देश को स्वतंत्र करने हेतु क्रांतिकारी नवयुवकों के स्थापित किये हिन्दुस्थान समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना के कमांडर इन चीफ थे हमारे मध्यप्रदेश के सपूत चंद्रशेखर आजाद। और जानते हैं उनकी सेना में कौन-कौन महारथी सेनानी है। स्वयं अमर बलिदानी वीरता के प्रतीक भगतसिंह हंसते हुवे फांसी पर लटकने वाले सुखदेव, सदैव मजाकिया लहजे में रहने वाले इसी अंदाज में फांसी को चूमने वाले राजगुरू, वीरता की प्रतीक मातृशक्ति दुर्गाभाभी और -और-और....। अनगिनत लोहे के हृदय वाले स्वतंत्रवीर और इनके निर्विरोध कमांडर थे चंद्रशेखर। इस क्रांतिकारी सेना में आखिर अपने नायक के रूप में चंद्रशेखर का चयन क्यों किया था? जबकि सभी सदस्य अदम्य साहस, पराक्रम और त्याग में अप्रतिम थे। इसका कारण था चंद्रशेखर की देश के प्रति समर्पण भावना। एक गुप्त बैठक में स्व. भगतसिंह ने प्रस्ताव रखा कि प्रजातंत्र सेना के पास जो भी थोड़ी बहुत राशि है। उसमें से कुछ राशि चंद्रशेखर के माता-पिता को दी जाये। चंद्रशेखर के माता-पिता गरीबी के कारण अपना भरण पोषण तक नहीं कर पा रहे थे। चंद्रशेखर ने भगतसिंह को उत्तर दिया कि क्रांतिदल में मैं अपनी स्वेच्छा से भर्ती हुआ हूँ, मेरा परिवार नहीं। जैसे देश के अन्य परिवार गुलामी के अभाव में जी रहे है वैसा मेरा परिवार भी रहेगा। उसके लिये धन भेजने की आवश्यकता नहीं हैं।

चंद्रशेखर की इस कठोरता तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण के कारण वे विश्व के इस अनोखे क्रांतिदल के निर्विरोध कमांडर इन चीफ रहे। चंद्रशेखर के नेतृत्व में 1 अगस्त 1925 को काकोरी के समीप सहारनपुर में लखनऊ ट्रेन से अंग्रेजों का खजाना लूटा। कानपुर, आगरा, दिल्ली में बम बनाने की फैक्ट्री स्थापित हुई।

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की हत्या का बदला लेने के लिये जनरल सांण्डर्स को गोली से उड़ाने का सफल अभियान हुआ। दिल्ली असेंम्बली में 8 अप्रैल 1929 को भगतसिंह द्वारा बम विस्फोट एवं पर्चे वितरण की योजना सफल रही। 23 दिसंबर 1929 को लॉर्ड इरविन की ट्रेन को निजामुद्दिन स्टेशन (दिल्ली) के पास बम से उड़ाया गया। 27 फरवरी 1931 को अभिन्न साथी सुखदेव के साथ प्रयागराज के अलफ्रेड पार्क में अंग्रेजों द्वारा घेर लिये गये। अपने प्रिय पिस्तौल से अंतिम समय तक अंग्रेजों से संघर्ष किया। परंतु संख्या में अंग्रेज अधिक होने से घेर लिये गये। अंग्रेजों की गिरफ्तारी में जाना चंद्रशेखर को स्वीकार नहीं था। अतः अंतिम गोली स्वयं की कनपटी पर मारकर आत्मबलिदान किया। कल्पना कीजिए चंद्रशेखर का जीवन कितनी तेज गति से बीता है। 25 वर्ष का छोटा सा जीवन काल समर्पित। चंद्रशेखर राष्ट्र को सर्वस्व देकर चले गये। बलिदानियों की प्रावीण्य सूचि में परमोच्च स्थान। धन्य हैं चंद्रशेखर आजाद और धन्य हैं उनकी माता जगरानी देवी और पिताजी पंडित सीताराम तिवारी। जय भारत।

हुतात्मा सरदार उधम सिंह

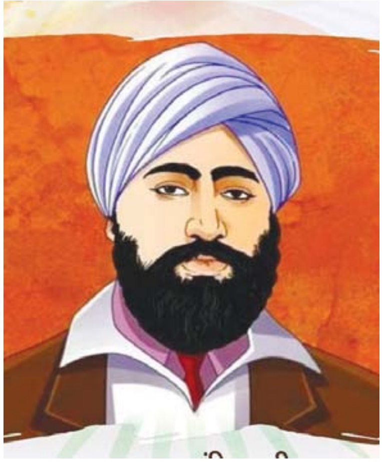

अशोक वर्मा

उधम सिंह एक महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थे उनके दिल में देशप्रेम और अंग्रेजों के प्रति क्रोध भरा था । उनका ध्येय अंग्रेजों की दासता से देश को मुक्त करना था । इस महान देशभक्त का जन्म 26 दिसंबर 1899 में पंजाब के संगरूर जिले के सुनाम नामक गाँव हुआ था । इनके पिता श्री तेहाल सिंह रेल्वे क्रासिंग पर वॉचमैन का कार्य करते थे एवं माता नरेन कौर एक गृहिणी थी तथा अपने दोनों बच्चों मुक्तासिंह और उधमसिंह की देखभाल करती थीं बचपन में उधमसिंह को शेरसिंह कहते थे। जब वे दो वर्ष के थे तब उनके पिता और उसके छः वर्ष बाद उनकी माता का दुखद निधन हो गया । फिर दोनों भाईयों को अमृतसर के खालसा अनाथालय में शरण लेनी पड़ी । 1917 में उनके भाई का भी निधन हो गया था उस कालखंड में भारत में आजादी की मांग जोर पकड़ रही थी उसे कुचलने के लिए अंग्रेज सरकार ने **'रोलेट एक्ट'** नाम से एक काला कानून देश में लागू कर दिया था। उस कानून के अनुसार अंग्रेज सरकार किसी भी भारतीय को बिना अदालत में ले जाये दो साल तक जेल में बंद रख सकती थी। इसका पूरे देश सहित पंजाब में भी भारी विरोध हो रहा था। अमृतसर में भी विरोध के दौरान पांच अंग्रेजों की मौत हो गई थी। सरकार ने अमृतसर के दो समाजसेवी डा. किचलू और डा. सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया था। उनको रिहा करवाने के लिए 13 अप्रैल वैशाखी पर्व के दिन स्वर्णमंदिर से कुछ दूर जलियाँवाला बाग में एक सार्वजनिक विरोध सभा का आयोजन किया था। लगभग बीस हजार लोग इकट्ठे हुए थे।

तब जनरल डायर अपने सैनिकों के साथ जलियाँवाला बाग में आता है एवं मुख्य प्रवेश द्वार को बंद कर अपने सैनिकों को गोली चलाने का आदेश देता हैं। डायर एवं उसके सैनिक जब तक गोलियां खत्म नहीं हुईं तब तक निहत्थे लोगों को घेरकर मारते रहे। पूरा जलियांवाला बाग स्त्री, पुरुषों और बच्चों की लाशों से पट गया। लोग अपने प्राण बचाने के लिए वहां स्थित कुएं मे कूदे लेकिन नहीं बच पाये, कुआँ भी लाशों से भर गया था। उस पवित्र दिन एक हजार से अधिक हत्याएँ जनरल डायर ने की थी। बताते हैं कि उधम सिंह उस दिन प्रदर्शनकारियों को पानी पिलाने का कार्य कर रहे थे। इस लोमहर्षक हत्याकांड को देखने के बाद उधम सिंह ने इसका बदला लेने की ठान ली थी । 1923 में वे गदर पार्टी में सम्मिलित होकर क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने लगे । 1927 मे गिरफ्तार कर लिये गये, चार वर्ष जेल में रहे । 1931 में जेल से छूटकर कश्मीर होकर जर्मनी पहुंच गए। वहाँ से अपने संकल्प को पूर्ण करने के लिए उधम सिंह 1934 में लंदन पहुंचे एवं इन्जीनियर बनकर उचित समय की प्रतीक्षा करने लगे। 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के केस्टल हाल में बैठक को संबोधित करने के लिए डायर आने वाला था। उधमसिंह भी अपनी पिस्तौल को छुपाकर वहाँ पहुंच गये थे। जैसे ही डायर ने अपना भाषण समाप्त किया उन्होंने दो गोली मारकर उस नरपिशाच का अंत कर दिया। इस प्रकार सरदार उधम सिंह ने हजारों भारतीयों की हत्याओं का बदला ले लिया। उसके बाद वहाँ से उन्होंने भागने का कोई प्रयास नहीं किया क्योंकि उनका प्रण पूर्ण हो गया था उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया एवं अदालती कार्यवाही के बाद 31 जुलाई 1940 को लंदन की पेरोनविले जेल में फांसी दे दी गई मात्र चालीस वर्ष की आयु में वे देश के लिए बलिदान हो गये ।

"भारत महान प्रश्नोत्तरी"

1. चित्र में दिख रहे इन महापुरूष का नाम क्या है?

2. इनका जन्म कब हुआ था?

3. इनका बलिदान दिवस कब आता है?

4. इन्होंने कौन से उत्सव को प्रारंभ किया जो पूरे देश में उल्लास के साथ मनाया जाता है?

उत्तर पृष्ठ क्रंमाक 13 पर पढ़े।

मालवा निमाड़ के लोक देवता-भगवान देवनारायण जी

जीवन सिंह ठाकुर

लोक देवी, देवता का भारतीय समाज में बड़ा महत्व है। यह महत्व और श्रद्धा-भक्ति का विकास समय परिस्थियों समाज, ऐतिहासिक समय में हुआ है। यहाँ ध्यान देना होगा कि 'लोक' में किसी को देवी, देवता यूँ ही नहीं मान लिया जाता है। लोक में स्वीकारोक्ति की प्रक्रिया बहुत ही कड़ी और सामाजिक संदर्भों में कठिन परीक्षा के बाद ही होती है। अतः समाज में किसी को 'देवता' के रूप में स्वीकृति होना यानी वह जीवन मूल्यों, सामाजिक प्रतिबद्धता, शोषण के खिलाफ संघर्ष, सामाजिक रक्षक, त्याग, बलिदान, आदि मूल्यों पर खरा उतरा है। ये मूल्य देवत्व की प्रतिष्ठा करते हैं।

देवनारायणजी - मालवा, राजस्थान, गुजरात में लोक में व्यापक रूप से पूजे जाने तथा मान्य 'लोकदेव' हैं। देवनारायण जी देवरे होते हैं। इनके गीत भीलों, गुर्जरों, कृषक जातियों में गाये जाते है।

देवनारायण जी ने भूणा जी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। उन्हें सर पाव और खाण्डा देकर 'खाण्डेराव' नाम दिया। देवनारायण जी के देवरे में 'खाण्डेराव' की भी उपस्थिति रहती है। सभी लोक देवों की पूजा-अर्चना सनातन हिन्दू पद्धति से की जाती है। देवनारायण जी का समय बेहद महत्वपूर्ण है। देवनारायण जी का जन्म 14 वीं सदी-1370 ई. है। देवनारायण जी क्षत्रिय राजपूत कुल राठौड़ बगड़ावत (वधावत) कुल में जन्मे थे। 1370- यानी 14 वीं सदी विदेशियों के हमले तथा विधर्मियों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों की थी। ऐसे में देवनारायण जी ने भारतीय लोक जीवन में समानता, संस्कृति, अध्यात्म, मातृभाव के लिए आजीवन कार्य किया।

देवनारायण जी के शिष्य खाण्डेराव राजस्थान, मालवा-निमाड़ (म.प्र.) में खाण्डेराव तथा महाराष्ट्र में 'खण्डोबा' कहलाते हैं। खण्डोबा आगे कर्नाटक में ''मल्लहारि मार्तण्ड भैरव'' कहलाते हैं। कर्नाटक में खाण्डेराव का मेला भरता है।

अगले अंक में पढ़े रामदेव बाबा के बारे में

देवशयनी एकादशी

देवशयनी एकादशी का हमारे देश में विशेष महत्व है। देवशयनी एकादशी से देवउठनी एकादशी तक कोई भी मांगलिक कार्य नहीं किया जाता। देवशयनी एकादशी से भगवान विष्णु योग निद्रा में चले जाते हैं क्योंकि पृथ्वीलोक का पालन पोषण वे ही करते हैं इसलिए शुभ कार्य नहीं किये जाते हैं। इन चार महीनों में सूर्य एवं चन्द्र बल में कमी आ जाती है तो किए गए शुभ कार्य उतने सफल नहीं होंगे। इस समय व्रत उपवास और तपस्या का बड़ा ही महत्व है। इस कारण सभी संत महात्मा इन चार महिनों मे अपने प्रवास स्थगित कर एक स्थान पर रुककर तप आराधना करते हैं जिसे **चातुर्मास** करना कहा जाता है।

पुराणों में कथा है कि शंखचूर नामक असुर से भगवान विष्णु का लंबे समय तक युद्ध चला। आषाढ़ शुक्ल एकादशी के दिन भगवान ने शंखचूर का वध कर दिया और क्षीर सागर में सोने चले गये। शंखचूर से मुक्ति दिलाने के कारण देवताओं ने भगवान विष्णु की विशेष पूजा अर्चना की। एक अन्य कथा के अनुसार वामन बनकर भग वान विष्णु ने राजा बलि से तीन पग में तीनों लोकों पर अधिकार कर लिया। राजा बलि को पाताल वापस जाना पड़ा। लेकिन बलि की भक्ति और उदारता से भगवान वामन मुग्ध थे। भगवान ने बलि से जब वरदान मांगने के लिए कहा तो बलि ने भगवान से कहा कि आप सदैव पाताल में निवास करें। भक्त की इच्छा पूरी करने के लिए भगवान पाताल में रहने लगे। इससे लक्ष्मी मां दुःखी हो गईं।

भगवान विष्णु को वापस बैकुंठ लाने के लिए लक्ष्मी मां गरीब स्त्री का वेष बनाकर पाताल लोक पहुंची। लक्ष्मी मां के दीन हीन अवस्था को देखकर बलि ने उन्हें अपनी बहन बना लिया। लक्ष्मी मां ने बलि से कहा कि अगर तुम अपनी बहन को खुश देखना चाहते हो तो मेरे पति भगवान विष्णु को मेरे साथ बैकुंठ विदा कर दो। बलि ने भगवान विष्णु को बैकुंठ विदा कर दिया लेकिन वचन दिया कि आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन तक वह हर साल पाताल में निवास करेंगे। इसलिए इन चार महीनों में कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता है।

भारत के महान गुरुओं की कहानी

डॉ. सोनाली नरगुंदे

आषाढ़ी पूर्णिमा को भारत के महान गुरू श्री वेद व्यास का जन्म दिन आता है। इस दिन को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। हमारी परंपरा में गुरू अंधेरे से उजाले में ले जाते हैं। जीवन का सद्मार्ग और जीवन की सद्गति गुरू के बिना संभव नहीं है। दुनिया में सर्वप्रथम गुरू की उपासना की जाती है क्योंकि इनके मार्गदर्शन के बिना हम कहीं नहीं पहुंच सकते हैं। गुरू गोविंद दोउ खड़े काके लागूं पांय, बलिहारी गुरू आपकी गोविंद दियो बताय। भारतीय ज्ञान परंपरा, पौराणिक काल और संस्कृति में भी गुरू की महिमा का वर्णन समय-समय पर किया जाता रहा है। देश के अनेक ऐसे गुरू हैं जिन्होंने ना सिर्फ अपने शिष्य बल्कि भारत के उत्थान का मार्ग सरल किया है। कबीर दास के गुरू घीसादास, शिवाजी के गुरू समर्थ श्री रामदास, भगवान श्री राम के गुरू वशिष्ठ और विश्वामित्र, हनुमान जी के गुरू स्वयं श्री सूर्य देवता, कृष्ण के गुरू सांदीपनी जैसे अनेक गुरूओं ने भारतीय धरती को अपने ज्ञान से परिपूर्ण किया है। इसी कड़ी में चाणक्य और चंद्रगुप्त भी आते हैं। ऐसे प्रत्येक काल में गुरू ने अपना नाम बदला है पर शिष्य के मशाल बनकर खड़े रहे हैं। ऐसे ही संत नामदेव को ज्ञान की प्राप्ति उनकी बहन मुक्ताबाई के कथनों के आधार पर हुई। द्रोणाचार्य को कौन भूल सकता है। हमारे देश में इस गुरू शिष्य जोड़ी के नाम से द्रोण तथा अर्जुन पुरस्कार भी दिए जाते हैं।

गुरू पूर्णिमा का दिवस प्रत्येक क्षेत्र में अपने महत्व के साथ मनाया जाता है। कुछ इसे आदियोगी शंकर के साथ जोड़कर देखते हैं। बौद्ध इसे बुद्ध के साथ समाहित किए हुए हैं। गुरू को ब्रह्मा, विष्णु और महेश की तरह देखा जाता है। भारतीय परंपरा में माता पिता को सबसे पहला गुरू माना जाता है। हमारे यहां जो भी ज्ञान देता है उसे गुरू कहा जाता है। भारत में भी कलाओं के क्षेत्र में आज भी गुरू और गुरूकुल परंपरा है। इसमें दीक्षा देने का संस्कार किया जाता है। शिष्य अपने गुरू और उनकी परंपराओं का पालन करते हुए शिक्षा ग्रहण करते हैं। यहीं से इस ज्ञान के स्थानांतरण की व्यवस्था का निर्माण होता है। आदि शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, संत रविदास, संत सूरदास, रामकृष्ण परमहंस, चैतन्य महाप्रभु, गुरू नानक देव, गुरू गोविंदसिंह गोस्वामी तुलसीदास, मीरा बाई जैसे कितने ही नाम हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर लोगों में ज्ञान परंपरा को प्रसारित किया। गुरू की शक्ति के आगे सभी नतमस्तक हैं। इसी लिए आज भी कहा जाता है कि जिसे गुरू नहीं मिलें उसे ज्ञान भी नहीं मिला। जीवन में एक अच्छे गुरू वैसे ही आवश्यक हैं जैसे सूर्य का प्रकाश या फिर जीवन जीने के लिए वायु। गुरू के मिलने की उम्मीद तब होती है जब हम अहं में नहीं रहते। जीवन और गुरू के प्रति सर्वस्व अर्पण करने की भावना से ही गुरू की प्राप्ति होती है।

आरूणि की कहानी

ऋषि धौम्य का प्रिय शिष्य आरुणि था। एक दिन बड़े ज़ोर की वर्षा हुई। आश्रम के खेत थे जिनमें अन्न उगा था। ऋषि न आरुणि को अपने पास बुलाया और उससे कहा कि वह जाकर देखे कि खेतों में कहीं कोई बरहा (नाली) तो पानी के ज़ोर से नहीं टूट गया है और यदि टूटा तो उस जाकर बंद कर दें। आरुणि तुंरत चल दिया। खेत मे एक जगह उसने देखा कि बरहा टूटा पड़ा है और पानी बड़े वेग के साथ खेत में घूस रहा है। उसने पानी को रोकने का बहुत प्रयास किया परन्तु बरहा बार-बार टूट जाता था। जितनी मिट्टी वह डालता सब बह जाती। काफ़ी देर संघर्ष करते हो गई लेकिन पानी को आरुणि नहीं रोक पाया। उसे गुरु के आदेश का पालन करना था चाहे कुछ भी हो। जब थक गया तो, वह स्वंय उस टूटी हुई मेंड़ पर लेट गया अब उसके बहने का तो प्रश्न ही नहीं था। पानी बंद हो गया। धीरे-धीरे वर्षा कम होने लगी, लेकिन पानी का बहाव अभी वैसा ही था, इसलिए उसने उठना उचित नहीं समझा।

इधर, गुरु को चिंता हुई कि इतनी देर हो गई आरुणि कहां गया। तब ऋषि धौम्य कुछ शिष्यों को साथ लेकर खेतों की ओर चल दिए जाते। उन्होंने खेत मे जाकर आवाज़ लगाई, 'आरुणि तुम कहां हो?' तो आरुणि ने उसे सुन लिया, लेकिन वह उठा नहीं और वहीं से लेटे-लेटे बोला, 'गुरुजी मैं यहाँ हूं।' गुरु और सभी उसकी आवाज़ की ओर दौड़े और उन्होंने पास जाकर देखा कि आरुणि पानी में तर-बतर और मिट्टी में सना मेंड़ पर लेटा हुआ है आरुणि की गुरु भक्ति ने उन्हें हिलाकर रख दिया। उन्होंने तुरंत उसे उठने की आज्ञा दी और गद् गद होकर अपने सीने से लगा लिया। सारे शिष्य इस अलौकिक दृश्य को देखकर रोमांचित हो गए।

ट्री ड्रॉफ्टिंग तकनीक

इस तकनीक का उपयोग कर एक जगह से दूसरी जगह पेड़ लगाने पर भी पेड़ जीवित रहता है

चित्र में जो आप नीचे से एक ठूंठ देख रहे हैं। वस्तुतः वह एक जीता जागता पेड़ है इस पीपल की कहानी बड़ी रोचक और समाज को प्रेरणा देने वाली है। सामान्य तौर पर देखा जाता है कि जब हम नया मकान बनाते हैं तो उस प्लॉट पर कोई भी पेड़ होता है। तो उसे बड़ी बेरहमी से काट कर हटा दिया जाता है। शायद इस पेड़ के साथ में भी ऐसा ही होता अगर यह पेड़ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उज्जैन कार्यालय आराधना में ना होता। जी हां उज्जैन के आराधना कार्यालय के नव निर्माण हेतु पुराने कार्यालय को ध्वस्त कर नए कार्यालय की रचना करने की बात कार्यकर्ताओं के मन में आई लेकिन इसी परिसर में एक बहुत बड़ा पीपल का वृक्ष था। जिसे हटाए बिना भवन अच्छा नहीं बन सकता था। कार्यकर्ताओं ने इस पर खूब चिंतन किया । इस पेड़ को हटाकर दूसरी जगह पर किस प्रकार लगाया जा सकता है। आखिर कार्यकर्ताओं की मेहनत रंग लाई। उन्होंने **ट्री ड्रॉफ्टिंग** नामक एक तकनीक का प्रयोग किया। एक भरे पूरे पेड़ को आराधना कार्यालय जो उज्जैन के सरदारपुरा में स्थित है। वहां से निकालकर शिप्रा नदी के किनारे ओखलेश्वर परिसर में स्थापित किया। सिर्फ उसे वहां स्थापित कर ही उसे भूले नहीं लगभग 1 वर्ष तक लगातार इस पेड़ की सेवा सुश्रृषा भी करते रहे । उसी का परिणाम यह है कि यह दूर से दिखने वाला ठूंस अब फिर से हरा भरा हो गया है और कुछ ही वर्षों में यह पूर्ववत अपनी लंबी और घनी शाखाओं को फैलाकर पक्षियों का स्वागत करेगा। अपनी छांव से राहगीरों को ठंडक प्रदान करेगा। यह चित्र समाज को एक नई दिशा देने को भी प्रेरित करता है। हम भी संघ के कार्यकर्ताओं के इस कार्य से प्रेरणा लेकर हमारे भी नए बनने वाले मकान के प्लॉट पर अगर कोई पेड़ है। तो उसे निर्दयता से काटकर नष्ट ना कर उसे उस स्थान से उखाड़ कर किसी दूसरे स्थान पर लगाएं क्योंकि उस वृक्ष में भी जान है।

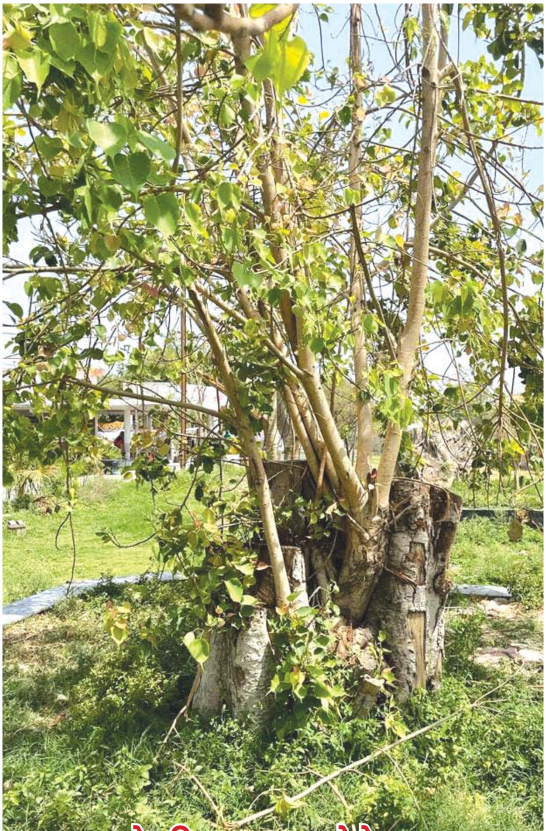
पेड़ फिर हरा-भरा होने लगा।

ओखलेश्वर परिसर में पेड़ की सेवा सुश्रृशा करते हुए।

कृषि के पंचमहाभूतों का प्रबंधन

अशोक कुमार पाटीदार

हमारे पंच महाभूत हमारी परंपरागत कृषि के आधार स्तंभ थे । इनके प्रबंधन को जानिए।

1. आकाश तत्व का प्रबंधन - पंचमहाभूत में जो पहला तत्व होता है। वह हैआकाश तत्व । धरती पर आकाश तत्व के जो प्रतिनिधि हैं वह हैं मधुमक्खियां, तितलियां और विशेषकर किसान मित्र पक्षी है । विचार करिए आपने इन्हें कब देखा था। मोर, तीतर, बटेर, कौआ, शिकरा, बाज, काली चिड़िया और गिद्ध आदि को किसानों का हितैषी कहा गया है। किसानों के ये मित्र दिनों-दिन लुप्त होते जा रहे हैं । ये पक्षी खेतों में बड़ी संख्या में कीटों को मारकर खाते हैं जहरीले रसायनों कीटनाशकों का स्प्रे करने से संपूर्ण जैव विविधता तथा मधुमक्खियों के साथ अनेक प्रकार के पक्षी जो किसान मित्र थे अब लुप्त होने लगे । महाराष्ट्र के महाबलेश्वर में तो अब मधुमक्खियां गायब हो चुकी हैं वहां के कृषि विशेषज्ञों के लिए अब यह बहुत बड़ी चिंता का विषय बन गया है । दिनों दिन मधुमक्खियों की संख्या बहुत कम होने से पर परागण एक विकट समस्या बनकर उभरी है। यदि कीड़ों की वंश वृद्धि निर्बाध रूप से होती रहे तो कुछ ही दिनों में सारी पृथ्वी पर कीड़े ही कीड़े हो जाएं। करोड़ों अरबों रुपए के जहरीले कीटनाशक भी इन को नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं इन कीड़ों को नियंत्रित करने के चक्कर में हम एक दिन संपूर्ण जैव विविधता को तबाह कर देंगे।

2. वायु तत्व का प्रबंधन - वायु तत्व भारत के परंपरागत किसान आज भी अमावस्या को बोनी नहीं करते। पूर्णिमा के आसपास बोनी करने से फसल अच्छी होती है। चंद्रमा का प्रभाव, जल तत्व की पूर्ति में सहायक सिद्ध होता है। रबीके मौसम में उत्तर से दक्षिण तथा खरीफ में पूर्व से पश्चिम की ओर घुमावदार बुवाई करना चाहिए ।

3.अग्नि तत्व का प्रबंधन - अग्नि तत्व भूमि की पाचन शक्ति को दर्शाता है । सभी प्रकार के एग्रीकल्चर वेस्ट तथा सूखे वृक्ष के पत्तों इत्यादि ह्यूमस एवम् कार्बन कि निर्मित करते हैं । किंतु हम खेतों में आग लगाकर एग्रीकल्चर वेस्ट को जला रहे हैं। जहां पुरानी लकड़ी का बुरादा आपके खेत का कार्बन बढ़ा सकता है नई लकड़ी का बुरादा आपके खेत का प्रोटीन बढ़ा सकता था हमने क्या किया ?

वृक्ष अपनी लंबी व गहरी जड़ों के द्वारा भूमि की निचली सतह 45 मीटर गहराई से पोषक तत्वों को ग्रहण करके, भूमि की ऊपरी सतह पर लाने में मदद करते हैं। जबकि हमारी फसलें 20 से 45 सेंटीमीटर तक ही अंदर जा पाती हैं प्रत्येक पेड़ के पत्तों में 30 एलिमेंट होते हैं, अर्थात संपूर्ण तत्व होते हैं। किंतु हमने अपने खेतों की मेड़ों से वृक्ष हटा दिए ।

4.जल तत्व का प्रबंधन - यह बात तो सर्वविदित है बिन पानी सब सून । कुछ देशों की एक बहुत सोची-समझी रणनीति के तहत 90 के दशक के बाद दुनिया के बहुत से देशों ने जिनके पास बेशुमार पानी भी था और उपजाऊ जमीन भी, उन्होंने अचानक एक नीति तैयार की और अपने पानी को बचाने के लिए उन अनाज और फसलों का उत्पादन बंद कर दिया, जो बहुत पानी लेते थे। इसे उन्होंने दूसरे देशों से खरीदना शुरू कर दिया। उदाहरण के लिए भारत में 1 किलो गेहूं के उत्पादन में तकरीबन 650 लीटर से लगाकर 950 लीटर पानी लगता है वही एक किलो चावल पैदा करने में 2 से 2500 हजार लीटर के आसपास पानी लगता है। अब यहां समझने वाली बात यह है अगर कोई देश अगर एक टन गेहूं का आयात करता है, तो गेहूं खरीदने के साथ उसके उत्पादन में लगने वाले 1300 क्यूबिक मीटर पानी की भी बचत करता है, जो मौजूदा विश्व में बहुत कीमती होता जा रहा है।

5.धरती तत्व का प्रबंधन - भूमि तत्व में पंचमहाभूतों के सभी प्रकार के गुणों का समावेश होता है । भूमि तत्व के संतुलन के लिए विशेष रूप से देशी बीज एवं गोधन अत्यावश्यक है। देसी बीज अब यदा-कदा गांव में कुछ घरों में दिखाई देते हैं जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता इतनी बढ़िया होती है कि कई प्रकार के रोग उनमें आते ही नहीं है । लेकिन आधुनिक संकर एवं जेनेटिकल मॉडिफाइड बीजों के चक्कर में हमने देशी बीजों को खो दिया ।

गौवंश अब घरों में नहीं गोशाला पर है । कंपोस्टिंग के लिए विशेष रुप से परिष्कृत गोबर आपको गाय माता ही दे सकती है। इसलिए हमें कृषि में अपने पंचमहाभूतों का प्रबंधन करना ही पड़ेगा।

भारत महान प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. लोकमान्य बालगंगाधर तिलक
2. 23 जुलाई 1856
3. 1 अगस्त 1920
4. स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है
5. गणेशोत्सव

हिंदी क्लास इन इंग्लिश

अ = पॉमग्रेनेट (अनार)

मैं अचंभित कम सदमे में ज्यादा हूं, जबसे मैंने अपने छः वर्षीय पोते के साथ पहली कक्षा की ऑनलाइन हिंदी क्लास अटैंड की है। मेरे लिए यह अजूबा अनुभव था। क्लास माइक्रोसॉफ्ट मीट पर आयोजित होनी थी। निर्धारित समय पर लेपटॉप स्क्रीन पर अवतरित होते हुए मैम बोली-'गुड मार्निंग चिल्ड्रेन, आई एम सिंदूरा आचार्य, योर हिंदी क्लास टीचर।' बच्चों ने अपने-अपने आडियो अनम्यूट करते हुए समवेत स्वर में 'गुडमार्निंग टीचर' का राग अलापा।

सिंदूरा मैम खुश होते हुए बोली - 'प्लीज म्यूट योर डिवाइसेस, आई विल फर्स्ट टेक योर अटेंडेंस एंड देन शो ए स्लाइड ऑफ नेटीकेट्स, सो प्लीज वाच केयरफुली।'

'ओके चिल्ड्रेन, टूडे वी विल लर्न हाऊ तो राइट स्माल अ एंड बिग आ'-सिंदूरा मैम बोली -'बच्चों मैं आपकी हिंदी टीचर हूं तो कभी-कभी हिंदी में भी बात करूंगी।' 'ओके मैम' - कुछ बच्चे माइक अनम्यूट करके (जो उनके स्मार्ट पैरेंट्स द्वारा किया गया था) बोले। 'थैंक्स गॉड, हिंदी की कक्षा में हिंदी सुनने को तो मिली', मैं मन ही मन बुदबुदाया।

'आई एम शेयरिंग माई स्क्रीन, यू केन सी हिंदी लेटर स्माल अ हेयर'- सिंदूरा मैम ने स्क्रीन शेयर की जिसमें अ के साथ अनार का चित्र बना था। उन्होंने आगे कहा- अनघा अनम्यूट योर सेल्फ और बताओ अ से कौन सा फल होता है।

'पॉमग्रेनट मैम' अनघा की आवाज सुनाई दी। 'वेरी गुड अनघा, नाऊ कीर्तिप्रिया यू टेल द नेम इन हिंदी।' कुछ पलों का सन्नाटा रहा। कीतिप्रिया कोई जवाब नहीं दे सकी। इसके बाद सिंदूरा मैम बोली - 'नाऊ इट्स ओपन फार आल, केन एनीबडी टेल।' मैंने अपने पोते की ओर देखते हुए धीरे से कहा-अनार। वह मेरी ओर इस तरह देखने लगा जैसे मैंने उसकी बेइज्जती कर दी हो। अंततः हार कर सिंदूरा मैम ही बोली-'चिल्ड्रेन लिसन केयरफुली, पॉमग्रेनेट इज काल्ड अनार इन हिंदी रिमेंबर स्माल अ फार अनार का उच्चारण किया। 'नाऊ वी विल लर्न टू राइट बिग आ, फर्स्ट यू राइट स्माल अ एंड देन ड्रा ए स्टैण्डिंग लाइन आफ्टर इट लाइक दिस'- सिंदूरा मैम ने राइटिंग बोर्ड पर लिखते हुए कहा-'हेव यू डन।' मेरा पोता बड़ा आ, नहीं नहीं सॉरी... बिग आ लिखने में व्यस्त था। मैंने अपने बेटे को आवाज दी- तुम्हीं इसके साथ बैठकर पढ़ाई कराओ, मुझे नहीं लगता कि मैं पहली कक्षा में भी पढ़ने के योग्य हूं। क्लास शुरू होने से पहले वाला मेरा उत्साह नदारद था।

मालवा महकता मधुवन है... कविता

मालवा महकता मधुवन है ,
साहित्य संस्कृति सर्जन का।
उत्थान पतन चिन्तन मन्थन
मन मर्दन मन संवर्द्धन का।।1।।

आलिंगन का आलिपन का
आलबन का अवलबन का ।
आराधन का अवराधन का
आवाहन का अवगाहन का ।।2।।

मनभावन पावन आँगन है
यह महाकाल के कानन का।
है दिव्य ज्योति का लिंग जहाँ
अधुनातन पिण्ड पुरातन का।।3।।

एकानन का चतुरानन का
पंचानन और षडानन का।
अष्टानन गान गजानन का
ससुराल दशानन रावण का।।4।।

अर्पण तर्पण मन दर्पण का
रण तारण तरण समर्पण का।
गुणगान बड़प्पन निर्धारण
साधारण के आकर्षण का।।5।।

गोचारण के परिचारण का
इन्द्रायण का चन्द्रायण का
रामायण के पारायण का
नारायण भव तारायण का।।6।।

- गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

पत्रकारिता में अवसर

निलेश माहुलिकर

पत्रकारिता शब्द आते ही मन में जो पहला विचार आता हैं वो समाचार पत्र अथवा न्यूज़ चैनल है। परंतु वर्तमान समय में पत्रकारिता सिर्फ़ समाचार पत्र या न्यूज़ चैनल तक बंधकर नहीं रह गई है इसका स्वरूप बदला है और ये आम लोगों की वैचारिक अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई हैं। तकनीकी के साधनों के आने के बाद सामान्य नागरिक भी मोबाइल और तकनीक के माध्यम से नागरिक पत्रकारिता कर रहा है। पत्रकारिता ना सिर्फ़ समाज जागरण का सशक्त माध्यम हैं बल्कि पत्रकारिता को अपने रोज़गार का साधन बनाने वालों के लिए भी इसमें उज्जवल भविष्य की संभावनाएँ हैं। पत्रकारिता में सर्टिफिकेट से लेकर मास्टर डिग्री एवं डॉक्टरेट तक के पाठ्यक्रम मध्यप्रदेश में प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानो में उपलब्ध हैं। पत्रकारिता में कैरियर बनाने के इच्छुक युवा अपनी रुचि के अनुसार निम्न में से किसी एक पाठ्यक्रम को करके इस क्षेत्र में आगे बढ सकते हैं। मध्यप्रदेश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओ में निम्न प्रकार के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

1. **सर्टिफिकेट प्रोग्राम** - सामान्यतः यह छः माह के कार्यक्रम होते हैं जो पत्रकारिता के मूलभूत ज्ञान के लिए आवश्यक होता है।

2. **डिप्लोमा पाठ्यक्रम** - इस प्रकार के पाठ्यक्रम सामान्यतः एक वर्ष या दो सेमेस्टर के पाठ्यक्रम होते हैं जो विश्वविद्यालय परिसर या उससे सम्बद्ध संस्थाओं के माध्यम से संचालित किए जाते हैं। इस प्रकार के पाठ्यक्रम नियमित प्रकार के पाठ्यक्रम होते हैं।

3. **स्नातक पाठ्यक्रम** - स्नातक पाठ्यक्रम तीन वर्षीय बैचलर डिग्री पाठ्यक्रम होते हैं। इसके लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता किसी भी विषय से कक्षा 12 वीं उत्तीर्ण होना आवश्यक होता है। यह नियमित प्रकार के पाठ्यक्रम होते हैं जिसमें विद्यार्थी को नियमित रूप से कक्षायें करनी होती हैं। कई विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से भी इस प्रकार के पाठ्यक्रम करने की अनुमति प्रदान करते हैं।

4. **स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम** - स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए किसी भी विषय से स्नातक होना अनिवार्य है। पत्रकारिता की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी के लिए शासकीय एवं निजी क्षेत्र की संस्थाओं में रोज़गार के अवसर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।

पत्रकारिता पाठ्यक्रम में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के मन में कुछ प्रश्न एवं उनके उत्तर-

पत्रकारिता के क्षेत्र में जाने के लिए मुझे कौन सा पाठ्यक्रम करना चाहिए-

आपको अपनी रुचि के अनुसार पत्रकारिता के विषय एवं

पाठ्यक्रम का चयन करना चाहिए। आपकी रुचि यदि ग्रामीण पत्रकारिता में हैं एवं आप खेल पत्रकारिता का पाठ्यक्रम करेंगे तो यह अनुपयोगी होगा। अतः अपनी रुचि के अनुसार विषय का चयन करें।

सर्टिफिकेट प्रोग्राम एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम में क्या अंतर हैं।

शासकीय नौकरी में कई बार डिप्लोमा पाठ्यक्रम माँगा जाता हैं जबकि सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम सिर्फ़ दक्षता बढ़ाने एवं जानकारी के लिए होते हैं। यदि विद्यार्थी चाहता है कि उसे ज्ञान के साथ साथ शासकीय सेवा के अवसर भी प्राप्त हो तो उन्हें डिप्लोमा पाठ्यक्रम की ओर जाना चाहिए।

मध्य प्रदेश में कौन कौन से संस्थान हैं जहां से पत्रकारिता के पाठ्यक्रम किए जा सकते हैं-

लगभग प्रत्येक विश्वविद्यालय में मीडिया एवं पत्रकारिता से संबंधित पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। परंतु पत्रकारिता के लिए विशेष रूप से माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल कई प्रकार के सर्टिफिकेट, डिप्लोमा एवं डिग्री पाठ्यक्रम संचालित करता है। यह भारत के पत्रकारिता संस्थाओं में अपना एक अलग एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विद्यार्थी अधिक जानकारी के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट **www.mcu.ac.in** पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पत्रकारिता के बाद रोज़गार के अवसर-

1. प्रिंट मीडिया/ अखबारो में संवाददाता से लगाकर 1 प्रिंट मीडिया/ अखबारो में संवाददाता से लगाकर सम्पादक तक बन सकते हैं।

2. डिजिटल/ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पाठ्यक्रम से न्यूज़ चेनल एवं डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर रोज़गार के अवसर उपलब्ध हैं।

3. स्वयं का समाचार पत्र /न्यूज़ चेनल प्रारंभ कर सकते हैं।

4 जनसंपर्क अधिकारी के रूप में शासकीय एवं निजी संस्थाओ में कार्यकर सकते हैं।

रेसकोर्स एवं वायएन रोड पर हुआ भव्य योग-उत्सव

स्वराज के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में आरोग्य भारती का भव्य आयोजन रेसकोर्स एवं वाय. एन. रोड पर संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ वेद मंत्रों के पाठ के साथ हुआ। भारतीय परिवेश 'साड़ी' में गणेश वंदना की प्रस्तुति कु. अनमोल अग्रवाल ने, कलात्मक योग की प्रस्तुति अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता कु. सपना पाल ने, योग संग कथक की प्रस्तुति कु. गीतिका पवार ने, एकल तालमय योग की प्रस्तुति 6 वर्ष की बालिका कु. श्रेया त्रिपाठी ने तथा सामूहिक तालमय योग की प्रस्तुति श्री योगेश पुरोहित की टीम ने दी। इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक पंकज गुप्ता एवं बेला गुप्ता द्वारा लिखित एवं चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित पुस्तक **प्राणायाम एक जीवन विज्ञान** का विमोचन भी किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आरोग्य भारती के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ अशोक जी ने कहा कि इंदौर की जनता को स्वच्छता की तरह स्वास्थ्य का संदेश पूरे राष्ट्र को देना चाहिए। इंदौर के योग प्रशिक्षक इस कार्य हेतु आगे आएं और स्वस्थ-व्यक्ति स्वस्थ-परिवार स्वस्थ-ग्राम एवं स्वस्थ-राष्ट्र का संदेश विश्व को दें।

स्वराज गौरव यात्रा ने बनाया रिकॉर्ड, भगवा साफा बांधे मातृशक्ति निकली

ये पहला अवसर है जब इंदौर में स्वराज गौरव को चिरस्थाई बनाने के लिए सामाजिक परिवेश में महिलाओं ने वाहन रैली के माध्यम से अपनी सशक्त भागीदारी का प्रदर्शन किया। आयोजक स्वराज अमृत महोत्सव समिति की सह संयोजक माला सिंह ठाकुर ने बताया कि आज हम सभी स्वराज के अमृत महोत्सव वर्ष के गर्व का अनुभव कर रहे हैं। देश की स्वाधीनता के लिए चले लंबे संघर्ष के कालखंड में अमर हुए बलिदानियों का स्मरण करने का यह सुअवसर है। देश व धर्म की रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। जिनका स्मरण हम सदैव करते ही हैं। किंतु इस वर्ष विशेष अवसर है उन अज्ञात वीरांगनाओं, क्रांतिकारियों और उनके तपस्वी परिवारों के स्मरण के साथ ही अपनी संतान को देश के लिए न्यौछावर करने वाली वीर माताओं के स्मरण का। इस निमित्त इंदौर शहर में विभिन्न आयोजन स्वराज 75 अमृत महोत्सव समिति द्वारा किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में 18 जून, 2022 को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में मातृशक्ति की दोपहिया वाहन रैली लालबाग और बाल विनय मंदिर से निकली। जिसमें बड़ी संख्या में मातृशक्ति भारत माता की जय, वंदे मातरम् और जय जय रानी झांसी रानी के जोरदार नारे लगाते हुए किला मैदान पहुंची।

जनजाति समाज से आई द्रौपदी मुर्मू के राष्ट्रपति बनने के मायने

राष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन दर्ज करते हुए।

पचहत्तर वर्षों बाद ही सही, क्रूर अंग्रेजों के ईसाई तंत्र की गुलामी से मुक्ति की लड़ाई में सर्वाधिक खून बहाने वाले वनवासियों की बेटी को भारत की सत्ता के शीर्ष पर देखना सुखद है। सुखद यह भी है कि जिस दल को ब्राह्मणों और बनियों की पार्टी बताया जाता है, उसी पार्टी ने श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी बनवाया। और सुखद यह भी है कि उस दल के सारे समर्थक पूरे मन से सरकार के इस निर्णय के साथ खड़े हैं।

जनजाति समाज की चर्चा होते ही मुझे याद आते हैं मेवाड़ो के वे भील योद्धा, जिन्होंने अपने रक्त से मेवाड़ी स्वाभिमान का इतिहास लिखा था। हम जैसे इतिहास के विद्यार्थी जितनी श्रद्धा से जयमल और फत्ता को याद करते हैं, उसी श्रद्धा से टांट्या भील को भी नमन करते हैं। याद आते हैं वे बिरसा भगवान, जिन्होंने ईसाई कुचक्रों को तोड़ने में अपना जीवन होम कर दिया। याद आते हैं सन 1855 में ही अंग्रेजों के विरुद्ध हूल मचाने वाले सिद्धो-कानू और उनके साथ वीरगति पाने वाले वे 20 हजार संथाली वीर, जिन्होंने ब्रिटिश अत्याचार से लड़ते हुए अपनी आहुति दे दी, पर न धर्म छोड़ा न ही स्वाभिमान का त्याग किया। जम्मू, हिमाचल, अरुणाचल, असम, नागालैंड, त्रिपुरा, मेघालय, झारखंड, छतीसगढ़... ईसाई तंत्र ने जनजातियों को सर्वाधिक पीड़ा दी है। और फिर उनके बाद अपने हिस्से की लड़ाई लड़ते हुए सर्वाधिक बलिदान भी उन्होंने ही दिया है। स्वतन्त्रता के बाद भी उन्हें मानसिक रूप से बंधन में रखने का ही प्रयास हुआ। वही उनके हितैषी बन कर आये और आठ -आठ आने वाली क्रोसिन की गोलियों के बदले में उनसे उनका धर्म छीना। उनकी युगों पुरानी परम्पराएं छीनीं, उनकी सभ्यता संस्कृति को मिटाने का षड्यंत्र रचा। उन्हें स्वतन्त्रता के बाद भी वह सब कुछ नहीं मिला, जो मिलना चाहिये था। केवल आरक्षण का झुनझुना पकड़ा देना ही यथेष्ट नहीं होता, सरकारी नौकरी और राजनीति अब भी केवल दो प्रतिशत लोगों का विषय होता है। शेष की इन दोनों से कभी भेंट नहीं होती। आज श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति की कुर्सी की ओर बढ़ते देख कर गर्व हो रहा है। मैं देख रहा हूँ उनके चेहरे में बिरसा भगवान का चेहरा! उनके साथ राष्ट्रपति भवन की ओर बढ़ रहे हैं वे सारे बनवासी योद्धा, जिन्होंने इस देश के लिए, अपनी मिट्टी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। यह सुखद है, सन्तोषजनक है। चुनाव बाकी है। विजय पराजय भविष्य के गर्भ में है। अभी मैं बस यही कह सकता हूँ: यशश्वी भव: विजयी भव: !

कौन हैं द्रौपदी मुर्मू?

द्रौपदी मुर्मू का जन्म 20 जून 1958 को ओडिशा में हुआ था। वह दिवंगत बिरंची नारायण टुडू की बेटी हैं। मुर्मू की शादी श्याम चरम मुर्मू से हुई थी। द्रौपदी मुर्मू ओडिशा में मयूरभंज जिले के कुसुमी ब्लॉक के उपरबेड़ा गांव के एक संथाल जनजाति परिवार से आती हैं। उन्होंने 1997 में अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की और तब से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। द्रौपदी मुर्मू 1997 में ओडिशा के राजरंगपुर जिले में पार्षद चुनी गई। 1997 में ही मुर्मू बीजेपी की ओडिशा इकाई की अनुसूचित जनजाति मोर्चा की उपाध्यक्ष भी बनी थीं। मुर्मू राजनीति में आने से पहले श्री अरविंदो इंटीग्रल एजुकेशन एंड रिसर्च, रायरंगपुर में मानद सहायक शिक्षक और सिंचाई विभाग में कनिष्ठ सहायक के रूप में काम कर चुकी थीं। द्रौपदी मुर्मू ने 2002 से 2009 तक और फिर 2013 में मयूरभंज के भाजपा जिलाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। द्रौपदी मुर्मू ओडिशा में दो बार की बीजेपी विधायक रह चुकी हैं और वह नवीन पटनायक सरकार में कैबिनेट मंत्री भी थीं। उस समय बीजू जनता दल और बीजेपी के गठबंधन की सरकार ओडिशा में चल रही थी।

ओडिशा विधान सभा ने द्रौपदी मुर्मू को सर्वश्रेष्ठ विधायक के लिए नीलकंठ पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया। द्रौपदी मुर्मू ने ओडिशा में भाजपा की मयूरभंज जिला इकाई का नेतृत्व किया था और ओडिशा विधानसभा में रायरंगपुर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था। वह झारखंड की पहली महिला राज्यपाल भी रह चुकी हैं झारखंड हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश वीरेंद्र सिंह ने मुर्मू को शपथ दिलाई थी। द्रौपदी मुर्मू ने जीवन में आई हर बाधा का मुकाबला किया। पति और दो बेटों को खोने के बाद भी उनका संकल्प और मजबूत हुआ है। द्रौपदी मुर्मू को जनजाति समुदाय के उत्थान के लिए काम करने का 20 वर्षों का अनुभव है।

इंदौर मे मोहम्मद ने खुद को महेश बता किया लव - जिहाद...

इंदौर(मध्यप्रदेश) बंबई बाजार के मोहम्मद वासिल पर एमआइजी थाना पुलिस ने शनिवार देर रात विभिन्न धाराओं में केस दर्ज किया। दुष्कर्म पीड़िता से मोहम्मद वासिल ने खुद का नाम महेश यादव बताकर शारीरिक संबंध बनाए थे। अलग-अलग मंदिरों में भी ले गया। मंगलसूत्र और माला पहनाकर शादी की। टीआइ अजय वर्मा के मुताबिक मूलतः शाजापुर निवासी 24 वर्षीय महिला फिलहाल, श्रीनगर एक्सटेंशन में रहती है। चार साल पूर्व ग्राफिक डिजाइनिंग का कोर्स करने इंदौर आई थी। वर्ष 2018 में खजराना निवासी शाहबाज खान ने उसके साथ दुष्कर्म किया। महिला ने शाहबाज पर पलासिया थाने में केस दर्ज करवा दिया था। इसी दौरान मोहम्मद वासिल संपर्क में आया। उसने कहा कि उसका नाम महेश यादव है। हिंदू होने के नाते शाहबाज के विरुद्ध दर्ज प्रकरण में मदद करना चाहता है। वासिल उसे थाने व कोर्ट ले जाने लगा। नजदीकी बढ़ाई और महाकाल व हरसिद्धि मंदिर (उज्जैन) ले गया। माला और मंगलसूत्र पहनाकर शादी कर ली। कुछ दिन बाद असली नाम मोहम्मद वासिल बताया और कहा दोस्त शाहबाज को दुष्कर्म केस से निकालने के लिए ऐसा करना पड़ा। वासिल के मामा (मौलवी) रिजवान मंसूरी ने घर पर ही निकाह करवाया और महिला का मतांतरण कर इनाया नाम रख दिया। उसका आरोप है कि पिछले साल गर्भवती हुई तो वासिल के दूसरे मामा जियाउल रहमान उर्फ गोलू और पिता सईद एहमद ने छत्रीपुरा स्थित निजी अस्पताल में गर्भपात करवा दिया। पीड़िता को दस दिन अस्पताल में रखा, लेकिन पर्चे में एक दिन भर्ती बताया। उसका गर्भपात करवाया और पर्चे में डेंगू का उपचार लिखवाया।

निजी अस्पताल में गर्भपात करवाया, पर्चे में डेंगू का उपचार लिखवाया, दुष्कर्म पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने विभिन्न धाराओं में दर्ज किया केस

पति के लापता होने पर थाने पहुंची महिला का आरोप है कि पूरी साजिश में जियाउल रहमान, रिजवान मंसूरी, सईद अहमद भी शामिल हैं। आरोपित सोने की हेराफेरी में भी लिप्त है । साजिश के तहत वासिल को गायब कर दिया। 21 दिन पूर्व वह अजमेर का बोलकर गया था। स्वजन ने उसे ढूंढा नहीं। पीड़िता ने ही गुमशुदगी दर्ज करवाई। टीआइ के मुताबिक एट्रोसिटी एक्ट, अवैध गर्भपात और धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के उल्लंघन के मामले में केस दर्ज कर लिया है। जिन लोगों पर आरोप लगाए हैं,उन्हें भी आरोपित बनाया जाएगा।

लव - जिहाद सुमित निकला इरफ़ान

उज्जैन के नागझिरी क्षेत्र में कोचिंग में साथ पढ़ने वाले युवक ने साथी छात्रा को नाम बदलकर फांसा और फिर जबरन अपने साथ शादी के लिए ले जाने लगा और जान से मारने की धमकी दी। जिस पर युवती ने हिम्मत दिखाते हुए थाने पहुंची और लव जेहाद के मामले की एफआईआर दर्ज करा दी। मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

नागझिरी निवासी 15 वर्षीय 11वीं की छात्रा ने पुलिस को बताया कि कोचिंग पर पढ़ने के दौरान सुमित से पहचान हो गई। इसी का फायदा उठाकर उसने पहले प्यार का इजहार किया और शादी की बात करने लगा। करीब छह माह पहले पता चला कि उसका असली नाम इरफान पटेल है। उसके बाद उससे बात करना बंद कर दी। लेकिन फिर उसने दबाव डालकर बुलाया और हाथ पकड़कर जबरन अपनी बाइक एमपी 13 एफएम 5883 पर बैठाकर ले जाने लगा। शोर मचाने पर वह मालनवासा के समीप जान से मारने की धमकी देकर छोड़कर भाग गया। टीआई विक्रम सिंह ईवने ने बताया कि मामले इरफान को केस दर्ज कर जेल भेज दिया।

बजरंग दल के कार्यकर्ता युवती के साथ थाने पहुंचे - बजरंग दल के पिंटू कौशल ने बताया कि बहन बेटियों के साथ इस तरह से नाम बदल बदल कर जो अपराध हो रहे हैं ये थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। उज्जैन में पूर्व में भी कई ऐसे मामले हमने पुलिस के सामने पेश किए बावजूद उसके कोई कड़ी कार्रवाई नहीं हुई है। बिटिया की जागरूकता की वजह से आज वो सुरक्षित है वहीं थाना प्रभारी विक्रम ने कहा कि युवक को गिरफ्त में ले लिया जाएगा, युवक के विरुद्ध धारा 363, 366, 354, 354 क व घ व अन्य में प्रकरण दर्ज किया गया है।

मालवा प्रान्त के 20 दिवसीय संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष विद्यार्थी सम्पन

बडवाह, खंडवा व मंदसोर में आयोजित हुए थे संघ शिक्षा वर्ग, प्रथम वर्ष

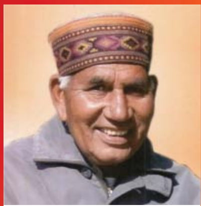
श्री चेतराम जी
सतत सक्रिय
जन्मदिवस : 3 अगस्त

श्री राधेश्याम जी
साहस एवं मनोबल के धनी
जन्मदिवस : 4 अगस्त

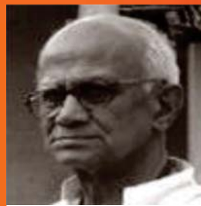
श्री सुरेन्द्र सिंह चौहान
ग्राम विकास के पुरोधा
जन्मदिवस : 7 अगस्त

श्री भानुप्रताप शुक्ल
अंतिम सांस तक राष्ट्र धर्म निभाया
जन्मदिवस : 7 अगस्त

श्री मधुकर राव भागवत
आदर्श कार्यकर्ता
पुण्य-तिथि : 10 अगस्त

श्री जी पुल्लारेड्डी
आधुनिक भामाशाह
जन्म दिवस : 10 अगस्त

श्री रामजीदास शर्मा
देह एवं सम्पत्तिदानी
जन्म दिवस : 12 अगस्त

श्री राजाभाऊ महाकाल
गोवा के स्वाधीनता सेनानी
बलिदान दिवस : 15 अगस्त

श्री राजपाल पुरी
सिन्ध में संघ कार्य के प्रणेता
जन्म दिवस : 18 अगस्त

श्री के.सूर्यनारायण राव
सेवा कार्य के आग्रही
जन्म दिवस : 20 अगस्त

डा. जगमोहन गर्ग
संकल्प के धनी
जन्म दिवस : 22 अगस्त

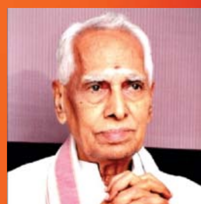
श्री कृष्णाप्पा
परिवार के संरक्षक
जन्म दिवस : 25 अगस्त

अगस्त माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ११ खुदीराम बोस शहीद दिवस
ता. १५ योगी अरविंद जयंती
ता. १६ रानी अवंतीबाई लोधी जयंती
ता. १९ संत ज्ञानेश्वर जयंती
ता. २६ देवी अहिल्याबाई होलकर पु.ति
ता. २९ खेल दिवस

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341